ISSN 2231-5187

साखी

38

सम्पादक
सदानन्द शाही

अंक : 38
मास : दिसम्बर, 2022
ISSN : 2231-5187

पाखी

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

संस्थापक : केदारनाथ सिंह
सम्पादक : सदानन्द शाही

www.premchandsahityasansthan.com

संस्थापक : केदारनाथ सिंह

सम्पादक मण्डल : अवधेश प्रधान/रघुवंश मणि/सन्ध्या सिंह
सम्पादक : सदानन्द शाही
सहायक सम्पादक : डॉली मेघनानी

प्रतिनिधि : भानुप्रताप सिंह, मो. 8299206277 (**गोरखपुर**)
बृजराज कुमार सिंह, मो. 9838709090 (**आगरा**)
कमल कुमार, मो. 7003022681 (**कोलकाता**)
सुजीत कुमार सिंह, मो. 9454351608 (**इलाहाबाद**)
निरंजन कुमार यादव, मो. 8726374017 (**गाजीपुर**)
अमित कुमार सिंह, मो. 9407655400 (**बिलासपुर**)
विशाल विक्रम सिंह, मो. 9461672755 (**जयपुर**)
राकेश कुमार रंजन, मो. 9450938895 (**गया**)

आवरण चित्र : योगेन्द्र त्रिपाठी

सज्जा : कृष्णा सिंह

प्रसार : विश्वमौलि, मो. 9450209580

अक्षर संयोजन : श्री काशी विश्वनाथ कम्प्यूटर, वाराणसी
मुद्रक : मित्तल आफसेट, वाराणसी

साखी को भुगतान करने के लिए किसी भी यूपीआई एप से इस क्यूआर कोड को स्कैन करें।
BHIM | UPI
PAY WITH ANY APP
UPI ID :
BHARATPE.0103070150@indus

सहयोग राशि

यह अंक	:	**अस्सी रुपये मात्र**
सदस्यता	:	**तीन सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) तीन हजार रुपये मात्र**
संस्थाओं के लिए	:	**पाँच सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) पाँच हजार रुपये मात्र**
विदेश के लिए	:	**चालीस डॉलर मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस अंकों के लिए) पाँच सौ डालर मात्र**

कृपया भुगतान 'साखी' के नाम डिमांड ड्राफ्ट /चेक/धनादेश से सम्पादकीय पते पर भेजें। बाहर के चेक में 15 रुपये अतिरिक्त जोड़ें अथवा साखी के खाता संख्या-**19270100012904** RTGS/NEFT IFSC Code **BARB0LANKAX (0 as Zero)** बैंक ऑफ बड़ौदा, लंका-वाराणसी में जमा करें।

सम्पादकीय सम्पर्क
क
बी-2, सत्येन्द्र गुप्त नगर, लंका
वाराणसी-221005, उ.प्र.
दूरभाष/फैक्स : 0542-2366771
मोबाइल : 7275466771, 9616393771

ईमेल
saakhee2000@gmail.com
वेवसाइट
www.premchandsahityasansthan.com

(वाद क्षेत्र : वाराणसी न्यायालय)

(राजेश कुमार मल्ल, सचिव-प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता, गोरखपुर, उ.प्र. द्वारा प्रकाशित)

www.notnul.com पर सभी अंक उपलब्ध

इस अंक में

सम्पादकीय

पीव क्यूं बौरी मिलहि उधारा — सदानन्द शाही — 5

हंगामा है क्यूँ बरपा — हरीश त्रिवेदी — 11

केदारनाथ सिंह स्मृति कविता सम्मान-1

कवि का जलता हुआ हाथ ही एक और अन्तिम मशाल है — सितांशु यशश्चंद्र — 21

संदीप शिवाजी राव जगदाले (मराठी कवि)—वक्तव्य एवं कविताएँ

राहों को प्रकाशमान बनाने के लिए हम आए हैं — संदीप शिवाजी राव जगदाले — 25

कविताएँ — 28

अंचित (हिन्दी कवि)—वक्तव्य एवं कविताएँ

जो हमारे समय के हिस्से में आया है, बिखरा हुआ है — अंचित — 37

कविताएँ — 39

देवेन्द्र कुमार बंगाली कविता सम्मान-1 से सम्मानित कवि सुभाष राय—वक्तव्य एवं कविताएँ

पैरों को चाट गये जूते, जिंदा हूँ तो अपने बूते — सुभाष राय — 47

कविताएँ — 56

'अध्यापक-आलोचक' : रामचन्द्र तिवारी — मधुरेश — 64

काव्य रमणीयता : नयी समीक्षा और कुंतक की विवेचना — मधुप कुमार — 71

दस्तावेज

सुन्दरता सार्वभौमिक है—रवीन्द्रनाथ ठाकुर — अनुवाद : अनुराधा बनर्जी — 77

गुजराती कविता

रघुवीर चौधरी की गाँधी पर केन्द्रित तीन कविताएँ — अनुवाद : वीरेन्द्र नारायण सिंह — 86

ओडिया कहानी
अंतिम हँसी—दीप्ति रंजन पटनायक अनुवाद : मनीष गुप्ता 91

कविता
निर्मला तोदी की कविताएँ 96
मिथिलेश श्रीवास्तव की कविताएँ 102
दुर्गा प्रसाद गुप्त की कविताएँ 109

आत्मकथा अंश
काशीवास—धर्मानंद कोसंबी मराठी से अनुवाद : रंजना अरगडे 114

परिसर से
कुशाग्र अद्वैत की कविताएँ 127
अंशु प्रिया की कविताएँ 140

संस्मरण
आज जब नामवर सिंह और पापा दोनों नहीं हैं अनूपा चौहान 145

पुनश्च : (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की षष्टिपूर्ति (26 अगस्त) के अवसर पर विशेष)
जलौघमग्ना सचराचरा धरा डॉ. धर्मवीर भारती 150

समीक्षा लेख
खिला करते थे जहाँ मीलों गुलाब, वो शहर... ध्रुव कुमार सिंह 156
(गाजीपुर का राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवलोकन—उबैदुर्रहमान सिद्दीक़ी)
कविताएँ जो ईश्वर का दुःख समझती हैं वंदना मिश्रा 170
(अरज निहोरा—प्रकाश उदय)
कवि के आत्मा की झांकियाँ अंशु प्रिया 176
(अंतस की खुरचन—यतीश कुमार)
पिता से संवाद करती कविताएँ रिंकी कुशवाहा 182
(अंधेरे में पिता की आवाज—संपादन सतीश नूतन)
कीर्तिगान : मनुष्यता पर गहराते संकट की पड़ताल कुमारी उर्वशी 185
(कीर्तिगान—चंदन पाण्डेय)
स्त्री के लिए चाँद की गवाही का अर्थात है प्रेम चन्द्रकला त्रिपाठी 191
(चाँद गवाह—उर्मिला शिरीष)
'बासवेल' के अंकनों का सरमाया भारती गोरे 196
(गुरुवर बच्चन से दूर—अजित कुमार)

सहयोगी 207

●

पीव क्यूं बौरी मिलहि उधारा

साहित्य निर्भय करता है, सत्ता भयभीत करती है। सत्ता का कारोबार भय पर टिका होता है, साहित्य का अक्षरों पर। सत्ता चाहे जैसी हो भय दिखाकर ही अपने को मजबूत करती है। कभी किसी समूह का, कभी किसी विचार का तो कभी किसी विश्वास का। भय के बिना सत्ता का काम नहीं चलता है। वह चाहे राजनीति की सत्ता हो, धर्म की हो या फिर ईश्वर की, सब के पीछे भय की वैचारिकी काम करती है।

अक्षर वह है जो क्षर नहीं होता। क्षर न होने का एहसास ही निर्भयता है। निरभय निरगुन के गुन गाऊँ का उद्घोष करने वाले कबीर की निर्भयता का स्रोत कहाँ है? क्षर न होने के एहसास में। 'हम न मरे मरिहें संसारा' में। कबीर हमें जिस बेहद्दी मैदान में ले जाते हैं उसका रास्ता निर्भयता से होकर जाता है। कबीर हों, विवेकानंद हों, गांधी हों, भगत सिंह हों, सब निर्भयता के रास्ते बेहद्दी मैदान तक पहुँचते हैं। यह निर्भयता अर्जित करनी पड़ती है। कबीर अर्जित करने पर ज़ोर देते हैं–

परोसिनि मांगे कंत हमारा।
पीव क्यूं बौरी मिलहि उधारा।।
मासा मांगे रती न देऊँ, घटे मेरा प्रेम तौ कासनि लेऊँ।
राखि परोसिनि लरिका मोरा, जे कछु पाऊँ सु आधा तोरा।
बन बन ढूंढ़ि नैन भरि जोऊँ, पीव न मिलै तो बिलखि करि रोऊँ।

कहै कबीर यहु सहज हमारा, बिरली सुहागिनि कंत पियारा।।

कबीर वाङ्मय खण्ड-2, पद-173, पृ. 219

कबीर हमेशा चकित करते आये हैं। यहाँ भी चकित कर रहे हैं। कबीर की महत्वपूर्ण स्थापना दो औरतों की बातचीत में सामने आती है। यहाँ सामने केवल एक औरत आती है। सामने आई औरत से पड़ोसिन (पड़ोस में रहनी वाली दूसरी औरत) उसके प्रिय को उधार माँगती है। इसी बात पर पहली औरत पूरे पद में जवाब दे रही है। जवाब क्या दे रही है, झिड़क रही है। झिड़कने में बेगानापन नहीं है, आत्मीयता और दुलार है। कबीर की झिड़कियों की यही ख़ासियत है कि उनमें दूसरे को नीचा दिखाने की उतावली नहीं; बल्कि उसे उन्नत करने का अपनापा रहता है। यह झिड़की देखिए—अरे बावली! क्या बात करती हो, प्रिय कहीं उधार माँगने से मिलता है। मज़े की बात यह कि सारा सवाल जवाब अकेले में नहीं, खुलेआम हो रहा है। बात अकेले में हो तो सन्दर्भ बदल जाता है, वही बात सरे बज़्म हो तो अर्थ बदल जाता है, ग़ालिब के 'जोश-ए-कदह से बज़्म चरागों किए हुए' की तरह। पड़ोसन से बात करते-करते अगली ही पंक्ति में वह औरत पाठक-श्रोता समूह को संबोधित करने लगती है और कहती है—देखिए मेरी बावली पड़ोसन को। मेरे प्रिय को उधार माँग तो रही है। लेकिन मैं देने वाली नहीं हूँ। भले ही वह अपने जाने बहुत कम यानी माशा (वजन करने का पैमाना) भर माँग रही है लेकिन मैं तो उसे रत्ती भर यानी माशे का आठवाँ हिस्सा भी नहीं देने वाली। थोड़ा भी दे देने से मेरा प्रिय घट जायेगा। वह जो पर्याप्त है, वह जो पूर्ण है, वह खंडित हो जायेगा। फिर मैं (वह पूर्णता) कहाँ से पाऊँगी? ऐसा भी नहीं है कि यह औरत अनुदार या कंजूस है, जो कुछ भी देना नहीं जानती, पड़ोसन के प्रति कटु होने का सवाल ही नहीं है। अगली पंक्ति में वह फिर पड़ोसन की ओर मुख़ातिब होती है और कहती है—तुम चाहो तो अपने लड़के को दे सकती हूँ, उसे ले लो। इतना ही नहीं मेरे अनन्य प्रेम से जो कुछ मुझे मिलेगा उसका आधा तुम्हें दे दूँगी। लेकिन वह प्रिय जो वन-वन ढूँढ़ने से मिला है, बिलख-बिलख कर रोने से मिला है, उसे नहीं दे सकती (क्योंकि उसे दिया ही नहीं जा सकता)। ठीक यहीं पर पद में कबीर प्रवेश करते हैं और कहते हैं—'यही हमारा सहज भाव है, कोई बिरली ही सुहागिन ऐसी होती है जिसे प्रिय मिलता है'। चाहते तो सब हैं, किंतु किसी बिरले को ही प्रिय मिलता है। यह बिरला कौन है? कबीर उत्तर नहीं देते। हमें विचार करने के लिए छोड़ देते हैं। बात पहले ही हो चुकी है प्रिय उधार नहीं मिलता। उसे अर्जित करना पड़ता है। जिसने अर्जित किया उसे मिला। यह कबीर का सहज भाव है। कबीर ने बार-बार इस सहज भाव को समझाया है—सहज सहज सब कोई कहै, सहज न चीन्हें कोय, जो सहजे विषया तजै सहज कहीजै सोय।। यह सहज सरल नहीं है। कबीर हों या गोरख या रैदास, सबके यहाँ सहज मिलता है। कई बार हम सहज को सरल समझने की भूल कर बैठते हैं और प्रायः सरलीकरण के शिकार हो जाते हैं। जीवन और जगत को समझने में सरलीकरण के नाते ग़लत नतीजे पर पहुँचते हैं। जब गोरखनाथ यह संकल्प लेते हैं कि हबकि न बोलिबा—हबक कर नहीं बोलूँगा तो इसी सरलीकरण से बचने की सलाह दे रहे होते हैं।

बहरहाल, कबीर के पद की ओर चलें। यह पद पढ़ते हुए आश्चर्य इसलिए भी हुआ